आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 1 सितम्बर, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

76वें स्वाधीनता दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग द्वारा दिये गये उद्बोधन के अंश

स्वाधीनता दिवस के 76वें पर्व पर आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हम सभी उपस्थित बन्धुओं ने स्वतन्त्र राष्ट्र में जन्म लिया तथा स्वतन्त्र राष्ट्र में अपने अधिकारों के साथ जीने का सौभाग्य प्राप्त किया। हमें यह भी गर्व है कि हम सभी को विशेष रूप से मेरी पीढ़ी के व्यक्तियों को, कि हमें राष्ट्र की आजादी का 75 वाँ अमृत–महोत्सव मनाने व इसका आनन्द उठाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर हम सभी को गर्व होना चाहिए कि हम सभी ने इस देश की डेमोक्रेसी को विश्व की सबसे बड़ी डेमोक्रेसी बनते तथा पनपते हुए देखा है तथा हमारी डेमोक्रेसी विश्व के लिए अनुकरणीय है क्योंकि अनेकता में एकता ही हमारी डेमोक्रेसी का मूल मन्त्र है। युवा साथियों, आप सभी को 25 वर्ष के पश्चात् भारत का शतक अमृत–महोत्सव मनाने का गौरव प्राप्त होगा तथा आप सभी उस पल के साक्षी होंगे। 75 वर्ष की काल अवधि कोई कम अवधि भी नहीं है। इन वर्षों में जो हमारे राष्ट्र की अभूतपूर्व उपलब्धियां है हमें उन पर गौरव होना चाहिए। इन सब के आधार पर ही आज हम आत्मनिर्भर राष्ट्र होने की ओर अग्रसर हैं। परन्तु आगे आने वाला समय और अधिक कठिन होगा, और अधिक प्रतिस्पार्धक होगा। प्रौद्योगिकी के आज के युग में आज विश्व की कोई सीमा नहीं है इसलिये अपने आप को अधिक सशक्त बनाने के लिए हमें अपनी शिक्षा, शिक्षानीति तथा विशेष रूप से दक्षता एवं कार्य क्षमता को निखारने एवं संवारने की आवश्यकता है तथा हमें अपनी प्रतिभा के आधार पर भारत को विश्व गुरू बनाते हुए वैश्विक चुनौतियों का सामना करना है। मैं यह बात विशेष रूप से युवाओं के हितार्थ कह रहा हूँ संभावनाएं अपार है, उन्हें तलाशते हुए, जोखिम उठाते हुए, आगे बढ़ने का क्षण है, अतः कमर कसिये और आगे बढ़िये, सफलता आपका इन्तजार कर रही है।

वर्तमान परिदृश्य में जब हमारे प्रदेश तथा देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि एवं पशुपालन आधारित होने तथा पशुपालन के क्षेत्र से प्राप्त होने वाली में निरन्तर वृद्धि सभी द्वारा स्वीकार हो चुकी है तो राजुवास की जिम्मेवारी और अधिक बढ़ गई है, सरकार तथा जनता की अपेक्षायें आप सभी से बहुत अधिक है। अतः हमें अपनी शिक्षा एवं शोध में गुणात्मक सुधार तथा प्रभावी प्रसार गतिविधियों के माध्यम से आमजन को अधिक सशक्त बनाते हुए राष्ट्र को सशक्त तथा आत्म निर्भर बनाने के संकल्प लेने का और अधिक कर्त्तव्यनिष्ठ होना होगा। इन शब्दों के साथ एक बार पुनः राष्ट्र के वीर बलिदानों तथा आजादी के दीवानों को पुण्य स्मरण, श्रृद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएं देता हूँ तथा विश्वास करता हूँ आप सभी युवा आगामी 25 वर्षों में राष्ट्र को और अधिक गौरवशाली, आत्म निर्भर तथा विश्व गुरू बनाने में समर्पित होकर नये आयाम स्थापित करेंगे। **जय हिन्द!**

विश्वविद्यालय द्वारा तिरंगा रैली का आयोजन

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 12 अगस्त को तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। तिरंगा रैली को वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार से रवाना होकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय सर्किल से वीर दुर्गादास सर्किल, एम.एन. हॉस्पिटल, तीर्थस्तंभ से होते हुए विश्वविद्यालय के सविंधान पार्क पर समाप्त हुई।

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के भवन का लोकार्पण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के चक 27 एन.टी.आर. में भवन का लोकार्पण 17 अगस्त को माननीय विधायक, नोहर श्री अमित चाचाण कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग एवं निदेशक अटारी, जोधपुर डॉ. एस.के. सिंह द्वारा किया गया। किसानों को सम्बोधित करते हुए माननीय विधायक अमित चाचाण ने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र के स्थाई भवन के निर्माण से किसानों एवं पशुपालकों को तकनीकी एवं आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि स्थाई भवन निर्माण होने पर कृषि विज्ञान केन्द्र अब अपनी वास्तविक विकास गति को पकड़ पाएगा। भवन के निर्माण होने से यहां विभिन्न प्रकार के कृषि व सहायक व्यवसाय के प्रशिक्षण अधिक कुशलता पूर्वक सम्पन्न होंगें जिससे क्षेत्र के किसान भाइयों को अधिक लाभ प्राप्त होगा। निदेशक, अटारी, जोधपुर डॉ. एस.के. सिंह ने बताया कि हनुमानगढ़ जिले में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का यह दूसरा केन्द्र है जो किसानों को कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में आ रही समस्याओं को दूर करने व नवीन तकनीकों के प्रचार प्रसार का कार्य महत्वपूर्ण रूप से करेगा। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया एवं किसानों एवं पशुपालकों से कृषि विज्ञान केन्द्र से जारी सूचनाओं, तकनीकी ज्ञान एवं प्रशिक्षणों का अधिक से अधिक लाभ उठाने का अनुरोध किया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के द्वारा तैयार गायों और भैंसों का गांठदार त्वचा रोग और चने की उन्नत खेती फोल्डर का विमोचन भी किया गया। लोकार्पण के अवसर पर श्री सोहन ढील, प्रधान पंचायत समिति, नोहर, श्री दानाराम गोदारा, उपनिदेशक कृषि विभाग, हनुमानगढ़, डॉ. आर.पी. डांगी, उपनिदेशक एटीसी–हनुमानगढ़, प्रो. हनुमानाराम प्रभारी कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र, हनुमानगढ़, डॉ. कुलदीप नेहरा, श्री दयाराम काकोडिया, डी.डी.एम. नाबार्ड, सहित के प्रगतिशील किसान एवं पशुपालक उपस्थित रहें।

कृषि विज्ञान केन्द, नोहर की 9वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर की 9वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक 17 अगस्त को माननीय कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। माननीय कुलपति ने पशुपालकों एवं किसानों तक उन्नत पशुपालन एवं कृषि तकनीकों को पहुंचाने के सभी माध्यमों का उपयोग करने की सलाह दी तथा किसानों की जरूरत के हिसाब से प्रशिक्षण कार्यक्रमों को चलाने पर बल दिया। उन्होंनें प्रदेश में फैल रही लम्पी स्किन बीमारी से बचाव के लिए जागरूक रहने के बारे में किसानों एवं पशुपालकों को जानकारी प्रदान करने के निर्देश दिये ताकि पशुधन की हानि का रोका जा सके। निदेशक अटारी, जोधपुर डॉ. एस.के.सिंह ने केन्द्र की वार्षिक प्रतिवेदन एवं आगामी कार्य योजनाओं पर समीक्षा की। बैठक में प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, सदस्य सचिव व निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर एवं डॉ. मनोहर सैन, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर उपस्थित रहे।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर प्रदर्शनी

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार 10–14 अगस्त तक विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में मनाने हेतु वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के प्रसार शिक्षा विभाग में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने बताया कि देश की आजादी से पहले देश ने बंटवारे के दर्द को झेला जिसमें लाखों लोगों को विस्थापित होना पड़ा था और बहुत से लोगों ने अपनी जान भी गंवा दी। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य नवयुवकों, विद्यार्थियों एवं आमजन में देश की आजादी के दौरान हुए बलिदानों एवं त्याग को स्मृति में लाना है ताकि नवयुवकों में देश के प्रति प्रेम, त्याग और बलिदान की भावना जागृत हो सके। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. आर.के. सिंह ने विद्यार्थियों से संवाद किया। प्रसार शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राहुल सिंह पाल ने प्रदर्शनी का आयोजन किया।

लम्पी स्किन रोग के नियंत्रण हेतु विश्वविद्यालय के प्रयास

राजस्थान के विभिन्न जिलों में गायों में फैल रहे लम्पी वायरस के संक्रमण की रोकथाम एवं नियंत्रण हेतु वेटरनरी विश्वविद्यालय ने भी अपने प्रयास तेज कर दिये हैं। कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने बताया कि लम्पी वायरस का संक्रमण धीरे–धीरे राज्य के सभी जिलों में फैल रहा है जो कि पशुपालकों की चिंता का कारण बना हुआ है। विश्वविद्यालय पशुचिकित्सकों की टीम बनाकर संक्रमण ग्रस्त पशुओं में सैम्पलिंग एवं इसकी रोकथाम हेतु प्रयास करेगा। साथ ही महाविद्यालयों के इर्न्टनशिप एवं पी.जी छात्रों की टीमे बनाकर जिले की गौशालाओं में संक्रमण की स्थिति को नियंत्रण करने का प्रयास भी किया जायेगा। कुलपति ने बताया कि पशुपालन विभाग के पशुचिकित्सा अधिकारियों को इस रोग के रोकथाम के उपायों से भी वेटरनरी विश्वविद्यालय समय–समय पर अवगत करायेगा ताकि प्रदेश में इस रोग के संक्रमण को रोका जा सके। इसके साथ ही पशु विज्ञान केन्द्रों एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रसार गतिविधियों के माध्यम से राज्य के पशुपालकों को लम्पी संक्रमण नियंत्रण हेतु सलाहकारी सेवाएं भी प्रदान की जा रही है, ताकि पशुपालकों को संक्रमण से होने वाली आर्थिक हानि से बचाया जा सके। विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित इम्यूनों बूस्टर मिश्रण लम्पी रोग ग्रस्त गायों को खिलाया गया तथा इसके परिणाम बहुत सकारात्मक है। इस मिश्रण को लम्पी रोग ग्रस्त पशुओं को खिलाने से उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर इस रोग के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

सीमा सुरक्षा बल के जवानों की ऊँट रैली का वेटरनरी विश्वविद्यालय में स्वागत

आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत 18 अगस्त को सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने केमल रैली निकाल कर ऊँटों के संरक्षण एवं संवर्धन का संदेश जन–जन तक पहुंचाया। कमाण्डेट, बी.एस.एफ., डॉ. गोपेश नाग के नेतृत्व में ऊँट रैली सीमा सुरक्षा बल मुख्यालय से पब्लिक पार्क, कीर्ती स्तम्भ होते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय पहुँची जहां पर कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग के नेतृत्व में शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने रैली का स्वागत किया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि हमारे लिए यह गर्व की बात है कि सीमा सुरक्षा बल ऊँटों के संरक्षण एवं संवर्धन का प्रयास कर रही है यह सराहनीय कार्य है। जन चेतना ऊँटों के संरक्षण का एक सशक्त माध्यम है।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

किसान भाई कृषि तकनीक को अपनाते हुए कृषि को व्यवसाय के रूप में लेवें - जिला कलेक्टर भगवती प्रसाद

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिये गांव गाढ़वाला में माटी परियोजना के तहत दिनांक 5 अगस्त, 2022 को जिला कलेक्टर, बीकानेर भगवती प्रसाद के मुख्य आतिथ्य में कृषक गोष्ठी व फार्म प्लान वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिला कलेक्टर भगवती प्रसाद ने बताया कि किसान कृषि को व्यवसाय के रूप में लेवें। सामुहिक रूप से कृषि करते हुए लागत को कम करें एवं अपनी उपज का उचित मूल्य बेहतर कृषि विपणन की जानकारी से प्राप्त करें। कृषि तकनीक को अपनाते हुए कम से कम रसायनों के उपयोग से जैविक खेती को बढ़ावा देवें। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से फसल सुरक्षा का लाभ लेवें। युवा साथी आगे आयें एवं कृषि में आय बढ़ोतरी को माटी परियोजना अपना कर सुनिश्चित करें एवं कृषि विकास में भागीदार बनें। विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. आर.के. धूड़िया ने किसानों व पशुपालकों को लम्पी स्किल डिजीज के लक्षण व रोकथाम के उपायों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

पशु जन्य रोग जागरूकता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निष्पादन एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अन्तर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 6 अगस्त को संगोष्ठी का आयोजन किया गया। राजकीय विद्यालय में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निष्पादन एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने पशुओं में फैल रही लम्पी स्किन रोग के नियन्त्रण हेतु स्वच्छता, पशुओं में संतुलित आहार एवं बेहतर आवास व्यवस्था पर प्रकाश डाला साथ ही उन्होंने दूषित वातावरण से मनुष्य एवं पशुओं में फैलने वाली संक्रामक रोगों से अवगत करवाया तथा स्वच्छता के महत्व को समझाते हुए भविष्य में बीमारियों के प्रकोप से बचने की सलाह दी। इस अवसर पर डॉ. मनोहर सेन ने जैव चिकित्सा अपशिष्ट के उचित निस्तारण की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान डॉ. देवेन्द्र चौधरी एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गाढ़वाला के प्रधानाचार्य श्रवण गोदारा एवं अन्य शिक्षक मौजूद रहे।

कम्प्यूटर साक्षारता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 30 अगस्त को कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि राजकीय संस्कृत प्रवेशिका विद्यालय में स्कूली विद्यार्थियों को डॉ. नरेन्द्र सिंह ने कम्प्यूटर की आधार–भूत जानकारी प्रदान करने के साथ–साथ कम्प्यूटर की विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगिता एवं महत्व को विस्तृत रूप से बताया। डॉ. निर्मल सिंह राजावत ने कम्प्यूटर का प्रायोगिक ज्ञान दिया। विद्यालय के अध्यापक सुधीर पारीक का कार्यक्रम आयोजन में सहयोग रहा।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 16 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 17, 18, 23, 24, 25 एवं 27 अगस्त को गांव बालरासर अथूना, बीनासर, भामासी, ढाढर, गांगू एवं थैलासर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 129 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 4, 5, 8, 17, 22, 24 एवं 29 अगस्त को गांव राजा का नगला, चीतापुरा, अटकी, पोथपुरा, पोहटी का नगला, खपरेल एवं गिरही लज्जा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 207 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 4, 10, 23 एवं 26 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन तथा दिनांक 18 अगस्त को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 258 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया द्वारा 6, 10, 16, 23 एवं 30 अगस्त को गांव बाकलिया, बादेड़, दुजार, निंबी जोधा एवं छप्पारा गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो में 103 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर द्वारा 2, 5, 10, 17 एवं 20 अगस्त को अबार, मेंहगाया, रिठोठी, तलफरा एवं आबोरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय आफॅलाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 99 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 6, 12, 16, 18, 23 एवं 26 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 156 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 16 एवं 22 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 36 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा दिनांक 4, 5, 6, 17 एवं 18 अगस्त को अम्बाफलान, घुरदूना, सिसोद, बिजूदा एवं लक्षमणपुरा गांवों में एक दिवसीय आफॅलाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 145 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 8, 16, 22, 23 एवं 26 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 88 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 5, 17 एवं 29 अगस्त अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 78 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 5 अगस्त को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 12, 16, 18, 20, 22 एवं 24 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 269 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 8, 16, 22, 26 एवं 30 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 139 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 8, 17, 20, 23 एवं 25 अगस्त को दसलाना, रंगपुर, चन्द्रेसल, जालखेड़ा, एवं खेंडली पाडंया गांवों में तथा दिनांक 6 एवं 27 अगस्त को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 184 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 6 एवं 8 अगस्त को गांव भगवान तथा परलिका गांवो में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 49 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

मृत पशु का उचित निस्तारण भी बचाता है संक्रामक रोगों से

पर्यावरण और जनस्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिए मृत पशु का निस्तारण ऐसे तरीके से किया जाना चाहिए जो अन्य स्वस्थ पशुओं में बीमारियां फैलने से रोके। पशु की मृत्यु के पश्चात उसका तत्काल निस्तारण उचित तरीके से किया जाना बहुत जरूरी है। मृत पशुओं को बहते पानी, नाला, नदी या जल धारा में नही फेंका जाना चाहिए और न ही अधिक समय तक बाड़े में रखना चाहिए, क्योंकि चिचड़ों/कीटों/चूहों एवं मक्खियों से मृत पशु से रोग दूसरे पशु में फैल सकते है। मृत पशु के गोबर और मृत्यु स्थल पर संक्रमित सामग्री को सावधानी पूर्वक हटाया जाना चाहिए अन्यथा संक्रमण होने की आंशका अधिक रहती है। आमतौर पर एक व्यस्क पशु का निस्तारण के लिए 1–5 घन मीटर जगह की आवश्यकता होती है। मृत पशु के निस्तारण के लिए कई तरीके है, जैसे मृत पशु को दफनाना, जलाना या भस्मीकरण और खाद् बनाना।

दफनाना : यह मृत पशु निस्तारण का सबसे प्राचीन और एक महत्वपूर्ण तरीका है, लेकिन दफनाए जाने वाले स्थान का सही चयन न करने पर भूजल प्रदूषण का खतरा पैदा हो सकता है। मृत पशुओं का दफन विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है। संक्रामक रोग से मृत पशु व इससे सम्बन्धित वस्तुओं को गांव के बाहर एवं किसी भी जलस्त्रोत से दूर लगभग 1.5 मीटर गहरे गड्डे में चूने या नमक के साथ दफनाया जा सकता है। मृत पशु के सम्पर्क में रही वस्तुओं एवं स्थान को फिनाइल/लाल दवा या सोडियम हाइपोक्लोराइट आदि से कीटाणु रहित जरूर करना चाहिए ताकि अन्य पशु संक्रमित न हो सके। मृत पशु को आमतौर पर मिट्टी में 2–3 मीटर गहरा दफन किया जाता है और उस पर कम से कम 1½ मीटर तक मिट्टी का ढेर लगाया जाता है और पत्थरों से भी ढक दिया जाता है ताकि कुत्ते या अन्य जानवर दुबारा गड्डे को न खोदें। मृत पशु पर नमक, ब्लीचिंग पाउडर या चूने का पाउडर डाला जाता है। मृत पशु निस्तारण स्थल का चयन करते समय इसका स्थान आवासीय भवन से कम से कम 500 मीटर की दूरी होनी चाहिए। मृत पशु को निस्तारण करने का स्थान जलग्रहण क्षेत्र जैसे नदियां, तालाब, कुआं आदि से भी दूर होना चाहिए।

जलाना या भस्मीकरण (इन्सीनेरेशन) : डीजल, प्राकृतिक गैस या प्रोपेन द्वारा मृत पशु को जलाना इन्सीनेरेशन कहलाता है। आधुनिक शव दहन के तरीकों में इस विधि द्वारा मृत पशु को जैव सुरक्षित तरीके से राख में तब्दील कर दिया जाता है। इस तरीके में अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होने के कारण यह आर्थिक रूप से सही नहीं मानी गयी है। इस निस्तारण तकनीक में मृत पशु को 1200°C में जलाया जाता है और राख को भी जमीन में दबा दिया जाता है। यह निस्तारण की सबसे सुरक्षित प्रक्रिया मानी जाती है। इन्सीनेरेशन प्रक्रिया सामान्यतः छोटे मृत पशुओं के निस्तारण के लिए काम में ली जाती है।

खाद् बनाना या कंपोस्टिंग : जिन क्षेत्रों में मृत पशु का दफनाना या भस्मीकरण व्यवहारिक नहीं है या प्रतिबंधित हो गया है उन क्षेत्रों में मृत पशु से खाद् बनाने की प्रक्रिया काम में ली जाती है। कपोस्टिंग शवों के निस्तारण का सबसे बेहत्तर तरीका है, क्योंकि इसे न्यूनतम लागत पर खेतों में तेजी से लागू किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में धान या गेंहू का भूसा, चूरा या चावल के ढ़ेर के बीच मृत पशु को रखा जाता है एवं नियमित अंतराल के बाद मिट्टी को संशोधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। भारत में यह प्रक्रिया सामान्यतः काम में नही ली जाती है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–सितम्बर, 2022

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लेक क्वाटर (बी.क्यु.)	गाय, भैंस	–	–	–	जयपुर, झालावाड़
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	जैसलमेर	अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, बारां, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, पाली, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जालोर, झुंझुनू, करोली, सीकर, झालावाड़, जोधपुर, नागौर, बीकानेर, जोधपुर, राजसमंद, चूरू
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जोधपुर	–	–	–
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	अलवर	बारां, कोटा	–	अजमेर, बांसवाड़ा, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जालोर, सिरोही, झालावाड़, प्रतापगढ़, सवाई माधोपुर, टोंक, उदयपुर
तिबरसा	गाय, भैंस, ऊँट	बारां	–	–	–
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	–	–	–	बारां, भीलवाड़ा, गंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, कोटा, राजसमंद
फेशिओलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	उदयपुर	–	–	–
गाँठदार त्वचा रोग	गाय	गंगानगर, हनुमानगढ, बीकानेर, जोधपुर, जालोर, जैसलमेर, चूरू, पाली, बाड़मेर	नागौर, सीकर, झुंझुनू, पाली	जयपुर, भरतपुर, धोलपुर, दोसा, सिरोही	कोटा, बारां, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डुंगरपुर, बांसवाडा, करोली, बूंदी, टोंक, प्रतापगढ़, सवाईमाधोपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जे.एस. मेहता, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं. 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

प्लास्टिक : पर्यावरण प्रदूषण के साथ पशुओं के लिए भी जानलेवा

विज्ञान में प्रगति एवं नए–नए आविष्कारों ने आज हमारी शैली बदल दी है इन नए आविष्कारों से प्लास्टिक की दुनिया में भी कभी प्रगति हुई है आज के युग को हम प्लास्टिक का युग कह सकते हैं आज रोजमर्रा के कार्यों में प्लास्टिक का उपयोग हो रहा है। घर, ऑफिस, दुकान, कारखाना, स्कूल, अस्पताल सभी जगह प्लास्टिक व उससे बने सामान का उपयोग हो रहा है साथ ही यह उपयोग दिनो–दिन बढ़ता ही जा रहा है एवं ऐसा लगता है कि प्लास्टिक के बिना काम नहीं चलेगा। इसका कारण प्लास्टिक का अन्य धातुओं से सस्ता, टिकाऊ, जंग रहित एवं रख–रखाव में आसान होता है। प्लास्टिक की इन खुबियों के कारण इनका बहुत अधिक उपयोग के साथ–साथ दुरूपयोग भी हो रहा है इसका सबसे बड़ा अवगुण यह है कि यह काफी समय तक नष्ट नहीं होता है एवं पर्यावरण प्रदूषण का कारण बनता है। इसका सबसे अधिक प्रभाव पशुओं पर पड़ रहा है इसके कारण पशुओं में गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हो रही है। ये प्लास्टिक पशुओं के आहार के साथ या उनके कचरा खाने के कारण पेट में पहुंच जाता है एवं पेट में फसकर उनके मौत का कारण बनती है। पॉलिथीन की थेलियां, प्लास्टिक के खिलौने, लिफाफे, पाइप इत्यादि कूड़े करकट नाली आदि में पड़े रहते हैं, ये हल्के होने के कारण ये उड़ कर खेत खलिहानों, चारागाहों में पहुंच जाते हैं कई बार खाद बनाते समय ये प्लास्टिक/ पॉलिथीन भी गोबर एवं कचरे के साथ डाल दी जाती है। ये प्लास्टिक कई सालों तक गलती नहीं है एवं खाद के साथ खेतों में पहुंच जाती है। साथ ही साथ हम लोग घर का कचरा, बचा हुआ खाना, सब्जियों के अवशेष पत्ते डंखल आदि पॉलिथीन की थेलियों में डालकर कूड़ेदान या सड़क के किनारे फेंक देते हैं जिनको ये निरह जानवर पॉलिथीन सहित खा जाते हैं। ये पॉलिथीन पशुओं के पेट में पहुंच कर वहीं जमा होती रहती है एवं कुछ समय पश्चात इन पशुओं में पेट का बध लग जाता है और ये काल का ग्रास बन जाते हैं। पर्यटन स्थलों, बस स्टैंड, रेलवे प्लेटफार्मों आदि जगहों पर भी पॉलिथीन की थेलियों में बची हुई खाद्य सामग्री डाल कर फेंक दी जाती है जिनको आवारा पशु खा जाते हैं। आजकल शादी–विवाह एवं अन्य समारोह में भी पॉलिथीन की बनी सामग्री का बहुत उपयोग हो रहा है इनको भी बची हुई खाद्य सामग्री के साथ आस–पास ही बाहर फेंक दिया जाता है। पशु अखाद्य पदार्थ को खाद्य पदार्थ से छांटकर अलग नहीं कर पाते एवं इस बची हुई खाने की सामग्री के साथ ये पॉलिथीन भी उनके पेट में पहुंच जाती है। बाहर चरने जाने वाले आवारा पशु इसका अधिक शिकार होते हैं। शहरों में ये समस्या और अधिक पाई जाती है। स्वाद रहित, चिकिनी एवं लचीली होने के कारण पशु अन्य खाद्य सामग्री के साथ इसे आसानी से निगल लेता है

ये पॉलिथीन पशु द्वारा खा लेने के बाद उसके पेट में जमा हो जाती है तथा पचती नहीं है एवं गोबर या जुगाली के साथ बाहर नहीं निकल पाती है। लंबे समय तक सेवन करने पर यह जमा होकर गोले या रस्सी का रूप भी ले लेती है। समय के साथ इसका आकार बढ़ाता जाता है एवं पशु के पेट में जगह कम हो जाती है इसके कारण पशु के पाचन क्रिया पर प्रतिकूल असर पड़ता है। पशुओं में पाचन संबंधी रोग जैसे भूख कम लगना, दस्त होना, आफरा होना, पेट का बंध लग जाना आदि हो जाते हैं। इनका कोई सरल औषधीय उपचार उपलब्ध नहीं है केवल ऑपरेशन से ही ये पॉलिथीन निकाली जा सकती है। इलाज के आभाव में पशु धीरे–धीरे कमजोर हो कर मर जाता है। अतः पशुओं के द्वारा पॉलिथीन के सेवन को रोक पाना ही इस समस्या का सबसे अच्छा समाधान है। हमें इसके लिए प्लास्टिक/ पॉलिथीन का स्वेच्छा से कम से कम एवं आवश्यकता होने पर ही उपयोग करना चाहिए साथ ही उपयोग के बाद उसका निस्तारण उचित तरीके से करना चाहिए ताकि ये पशुओं की खाद्य सामग्री तक नहीं पहुंचे। कभी भी पॉलिथीन की थैलियों में फल, सब्जियों के अवशेष, बची हुई खाद्य सामग्री डाल कर बाहर नहीं फेंके, पॉलिथीन/प्लास्टिक का निस्तारण बताये हुए वैज्ञानिक तरीकों से ही करें जिससे पर्यावरण प्रदूषण भी नहीं हो एवं पशुओं का जीवन भी बच जाये।

डॉ. राजेश नेहरा एवं डॉ. जाग्रति श्रीवास्तव
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

अफ्रीकन स्वाइन फीवर

अफ्रीकन स्वाइन फीवन (ए.एस.एफ.) घरेलू और जंगली सुअरों का एक अत्याधिक संक्रामक वायरल रोग है जो अफ्रीकन स्वाइन फीवर वायरस के कारण होता है जो असफरविरिडे परिवार का एक सदस्य है। इसमें मृत्यु दर लगभग 95–100 प्रतिशत है। यह पहली बार वर्ष 1920 के दशक में अफ्रीका में पाया गया था। वर्ष 2007 के बाद से अफ्रीका, एशिया और यूरोप के कई देशों में घरेलू और जंगली सूअरों में इस बीमारी की पुष्टी की गई। इस रोग का वायरस पर्यावरण में अत्यधिक सक्रिय है जिसका अर्थ है कि यह कपड़े, जूते, पहियों और अन्य सामग्रियों पर जीवित रह सकता है। संक्रमित सूअरों के मल या शरीर के तरल पदार्थो के सीधे संपर्क में आने से यह रोग फैलता है। उपकरण, वाहन या ऐसे लोगों से जो अप्रभावी जैव सुरक्षा वाले सुअर फार्मो के बीच सुअरों के साथ काम करते है वे भी रोग के फैलाने का कारण बनते है।

लक्षणः–

- उल्टी, दस्त (कभी–कभी खूनी दस्त लगना),
- त्वचा का लाल या काला होना विशेष रूप से कान और थूथन,
- गर्भपात, मृत जन्म और कमजोर बच्चे,
- कमजोरी और खड़े होने में असमर्थता,
- तीव्र रूप में सूअर के शरीर का तापमान उच्च (40^{0}C या 105^{0} F) होता है, फिर यह सुस्त हो जाते है और अपना भोजन छोड़ देते है, और संक्रमण में सुअरों की मृत्यु दर काफी अधिक होती है।

उपचारः– इस बीमारी के लिए कुछ खास उपचार उपलब्ध नही है। लक्षणों के आधार पर एंटीबायोटिक्स दवाइयों का उपयोग किया जाता है। इसके प्रसार की प्रारंम्भिक पहचान करके तथा पशुचिकित्सक से सम्पर्क करके समय पर इस पर नियंत्रण किया जा सकता है।

रोकथामः– अफ्रीकन स्वाइन फीवर मनुष्य के लिए खतरा नही होता, क्योंकि यह बीमारी केवल पशुओं से पशुओं में फैलती है। यह मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा नही है, लेकिन सूअर आबादी और कृषि अर्थव्यवस्था पर इसका विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। वर्तमान में इस बीमारी के लिए कोई प्रभावी टीका नहीं है।

जैव सुरक्षा उपाय जो पशुपालक कर सकते हैः–

- केवल आवश्यक आंगतुकों को अपने खेत में प्रवेश करने दे और जोर दें कि वे साफ या डिस्पोजेबल कपड़े और जूते पहने और अपने हाथ धोएं।
- वाहनों और उपकरणों को कीटाणुरहित होने के बाद प्रवेश दें।
- सुअरों को खाने–पीने के कचरे/कबाड़ को खिलाने की अनुमति न दें व इसका सुरक्षित रूप से निपटान करें।
- यह रोग जैव विविधता और पारिस्थितिक तंत्र के सन्तुलन के लिए भी एक चिंता का विषय है, क्योंकि यह न केवल घरेलू खेती वाले सूअरों को प्रभावित करता है बल्कि देशी नस्लों सहित जंगली सूअर को भी प्रभावित करता है।

डॉ. चान्दनी, डॉ. रेखा व डॉ. देवेन्द्र
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

उन्नत नस्ल अपनाकर आर्थिक रूप से सुदृढ़ सत्यनारायण पंकज

ग्राम जगन्नाथपुरा, तहसील लाड़पुरा, जिला कोटा के प्रगतिशील पशुपालक श्री सत्यनारायण पंकज पुत्र श्री रामकिशन पंकज, कृषि के साथ–साथ पशुपालन व्यवसाय को सीमित स्तर पर पिछले दस वर्षो से करते आ रहे है। पशु विज्ञान केंद्र, कोटा द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों मे भागीदारी निभाई थी। इसी दौरान केंद्र द्वारा दी गई जानकारियों को अपनाते हुए इनमे गत दो वर्ष पूर्व उन्नत नस्ल के पशुओं को पशुशाला मे शामिल करने की इच्छा जाग्रत हुई। इनके पास 10 बीघा कृषि भूमि है। स्नातक स्तर तक शिक्षित होने के बावजूद भी इनकी रूचि सदैव ही पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाने की थी। वर्तमान में इसको यर्थात के धरातल पर साबित कर पशुपालन को एक सफल व्यवसाय के रूप मे आगे बढ़ा रहे है। इनके पास 18 उन्नत नस्ल के पशु है जिनमें 14 भैंसें मुर्रा नस्ल की और 4 गायें हैं एंव 10 छोटे पशु है। प्रतिदिन दुग्ध उत्पादन लगभग 80 लीटर होता है एवं उत्पादित दूध को निकट के दूध संकलन केंद्र मे देते है। एक सफल डेयरी व्यवसायी के साथ–साथ अपने आस–पास के क्षेत्र के गॉवों में भी लोगों में काफी पहचान बना ली है। आस–पास के गांवो के लोग भी इनसे पशुपालन से सम्बंधित जानकारी व सलाह के लिए सम्पर्क में रहते है। इन्होंनें दो लोगो को रोजगार भी प्रदान कर रखा है। पशुओं के लिए चारा की पूर्ति स्वंय के खेतों से हो जाती है। इनके पास चारा काटने की मशीन भी है, साथ ही अजोला उत्पादन भी करते है। इन्होने सम्पूर्ण पशुशाला मे पक्का भोड मय पंखे करवाया हुआ है। श्री सत्यनारायण अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को अधिक महत्व देते है। प्राथमिक उपचार पशु विज्ञान केंद्र, कोटा के वैज्ञानिकों एंव पशुचिकित्सकों की सलाह से स्वंय कर लेते हैं आवश्यकतानुसार पशुचिकित्सक की सेंवाऐं भी लेते है। पशु विज्ञान केंद्र, कोटा द्वारा इनको समय–समय पर पूरा सहयोग किया जाता है एवं कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण ग्याभिन पशुओ की देखभाल, पशुओ मे नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन मे वृद्धि, संतुलित पशु आहार, यूरिया उपचारित भूसा एवं यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक आदि की जानकारी साझा करते है। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय लगभग पांच लाख रूपये तक हो जाती है। निकट भविष्य में गिर नस्ल की देशी भारतीय गौवंश के संवर्द्धन एंव उन्नयन की सोच रखते हुए पशुपालन व्यवसाय को ओर भी वृहद स्तर पर करना चाहते हैं। श्री सत्यनारायण पंकज अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के सदस्यों के साथ–साथ पशु विज्ञान केंद्र, कोटा को देते हैं।

सम्पर्क- सत्यनारायण पंकज, ग्राम- जगन्नाथपुरा, लाड़पुरा, जिला- कोटा (मो. 9667481877)

निदेशक की कलम से...

रोग प्रतिरोधकता बढ़ाकर पशुओं को संक्रामक रोगों से बचायें

रोग प्रतिरोधक क्षमता रोगाणुओं से लड़ने की क्षमता होती है। साधारण शब्दों में कहे तो शरीर में रोग पैदा करने वाले हानिकारक कीटाणुओं को कोशिकाओं के अन्दर प्रवेश ना करने देने की क्षमता ही रोग प्रतिरोधक क्षमता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता को बनाये रखने के लिए शरीर को प्रोटीन, विटामिन्स और खनिज मिश्रण की आवश्यकता रहती है। अतः पशुओं को शुद्व व संतुलित आहार उपलब्ध करवाना चाहिए। ज्यादातर पशुपालक अपने पशुओं को भरपूर पोषण नही देते है ऐसे पशु का शारीरिक विकास तो रूकता ही है साथ ही पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कम हो जाती है। अतः पशुओं के आहार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है इसके लिए पशुपालक दाना, खली, चोकर, खनिज लवण मिलाकर संतुलित आहार तैयार कर पशुओं को देवें। अभी प्रदेश में गायों व भैसों में लम्पी स्किन बीमारी का प्रकोप चल रहा है जिससे काफी पशुओं की मृत्यु भी हो रही है। इस रोग से पशुओं को बचाने के लिए संतुलित आहार देना चाहिए। एलौपेथिक उपचार के साथ–साथ पांरपरिक चिकित्सा पद्वति से भी पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई जा सकती है। इसके लिए 100 ग्राम अश्वगंधा की जड़ का पाउडर, 100 ग्राम हल्दी पाउडर, 100 ग्राम आंवला पाउडर, 100 ग्राम काली जीरी एवं 100 ग्राम सुखी तुलसी की पत्तियां मिलाकर रख लेवें तथा 50–50 ग्राम रोजाना सुबह गुड़ या बाजरी के आटे में मिलाकर 5–7 दिन तक पशुओं को देवें यह पाउडर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक है। इसके साथ साथ राज्य सरकार के निर्देशानुसार रोजाना एक मुठी तुलसी के पत्ते, 5 ग्राम दालचीनी, 5 ग्राम सौंठ पाउडर, 10 नग काली मिर्च आदि गुड़ में मिलाकर पशुओं को लडडु बनाकर खिलाना चाहिए जिससे पशुओं को लम्पी रोग के संक्रामण से बचाया जा सके। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर ने पशुओं की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए एक इम्यूनिटी बुस्टर भी तैयार किया है जो प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में काफी कारगर है। इसके अलावा पशुओं के बाड़ो में साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए तथा चार माह से उपर के स्वस्थ पशुओं में टीकाकरण कर इस रोग के प्रकोप से बचाया जा सकता है। अतः किसान एवं पशुपालक भाई अपने पशुओं को संतुलित आहार देकर तथा पांरपरिक चिकित्सा पद्धति से उपरोक्तानुसार बताये गये मिश्रण तैयार कर पशुओं को खिलाकर उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा सकते है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/ विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया